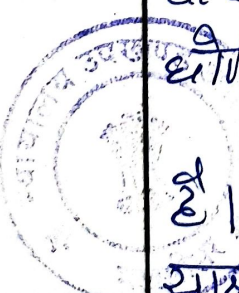


~~23~~

पत्रावली पैसा हुई। वादी अधिवक्ता उपस्थित। बाद
 दर्ज रिप्लाइ कर सम्मन जारी किए गए। प्रतिवादी
 संख्या 1। लगायत 12 बाद सम्मन तारीख भी उप-
 स्थित नहीं हुए; अतः इनके विरुद्ध एकपक्षीय
 कृप्याही आदेश में लाई गई। प्रतिवादी संख्या 13
 व 14 परीमार राज ठे जिन्हे द्वारा जवाब देखा
 प्रस्तुत नहीं किया गया इनका जवाब खदे किया
 गया है।

मकल से सम्बन्धित संक्षिप्त तथ्य इस प्रकार
 से है राज्य ग्राम मदनसद तहसील मललीमर में
 जमीन गल खसरा नम्बर 58 राहाही 22 बीघा
 17 बिस्वा स्थित है जिसे वादी कुं देवा मंडू खां
 पुत्र महनू खां जाति इयम खानी निवासी मदनसद
 ने तत्कालीन सहायक कमिश्नर इन्सुतु के यहां बुकेशन
 उनवानी मंडू खां वनाम द्वारा 05/12/57 पैसा
 किया जो उक्त न्यायालय द्वारा दिनांक 06.12.1958
 को डिक्ली कर मंडू खां के पुत्र अलीम खां एवं कसिम
 खां एवं स्त्री पैपी को आवेदार कस्तमर घोषित
 कर दिया गया लेकिन पारिवर्त निर्णय एवं डिक्ली का
 क्रियान्वयन नहीं करवाया जा सका। वादी ने
 पुनः देवाउर निवेदन किया है कि पूर्ववती दायी की
 रीशानी में वादी नम्बर 1 को 3/4 हउ हिस्से तथा
 वादी नम्बर 2 को 1/4 हिस्से का आवेदार कस्तमर
 घोषित किया गया।



प्रस्तुत वाद में वाद विद्घ वन्दे नहीं
 है। वाद को साबित करने के लिए वादी ने दस्तखत
 समर्थी में प्रदत्त। लगायत 20 प्रस्तुत किए हैं।

लगायत

हुकम को खिंच
जारी हुकम

मौखिक साक्ष्य में वादी स्वयं ने अपना शपथपत्र
पेश किया है (PW-1)। वकीलवादी ने अपनी बख्त
में वाद में अंकित तथ्यों की पुनरावृत्ति करते हुए
बुझा दिया कि वादगत भूमि जिस बाबत दावा
किया गया है उसमें पूर्व में सशम न्यायालयद्वारा
दिल्ली और निर्वय पारित किया जा चुका है।
जिसकी प्रमाणित प्रति दस्तावेजों के साथ संलग्न है।
वादी ने अपनी बख्त में दावे में अंकित तथ्यों की
ही पुनरावृत्ति की।

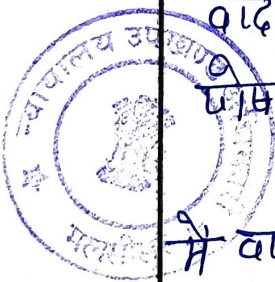
वादी वकील की बख्त पर मनन किया
गया। पत्रावली पर उपलब्ध रिकॉर्ड व दस्तावेजों का
अध्ययन किया गया। वादी स्वयं द्वारा वाद पत्र में
स्वीकृत तथ्य है कि इसी हक भूमि का मुताबिक
वाद सशम सशम न्यायालय सहयुक्त डलमटर इंसान
के समक्ष प्रस्तुत किया गया था जिसका मुंडवमा
नम्बर 65/1957 है जो वाद वादीशु के पूर्वजों
के पक्ष में दिल्ली और निर्वय पारित किया जा चुका
है; जिसकी प्रमाणित प्रति भी न्यायालय में पेश की
है। पूर्वकी वाद में जो भूमि विवादित थी वोही
भूमि इसी प्रकृति में भी विवादित है। ये वादीद्वारा
स्वयं अपने वाद पत्र में स्वीकृत किया गया है कि
वाद उसी भूमि मुताबिक है और उन्ही के वादिलानों
द्वारा दावा पेश किया गया है। उसी भूमि के बारे
में जालेदारी अधिकारी की घोषणा के लिए वाद
लेवर आयें हैं जो सशम राजस्व न्यायालयद्वारा
पूर्व में दिल्ली एवं निर्वय पारित किया जा चुका है।
दिल्ली के निष्पादन के लिए कोई इजवाही नहीं की
गई और ना ही तबसलिद्वारा से नामान्तरण



हर्ष खाने की ब्यापारी अमल में लाई गई ।
लिमिटेड एक्ट के आर्टिकल 136 के तहत इजराय
की म्याद 12 वर्ष है इजराय भी पुराना नहीं गई ।

अपर वर्जिड तयों के आधार पर यह प्रतीत
होता है कि उक्त प्रकृत सिविल प्रक्रिया संहिता 1908
के अन्तर्गत आता है; जिसके तहत कोई न्यायालय किसी ऐसे कस
विवाद का सिद्ध नहीं करेगा जिसमें पक्षकार: और
सारत: विवाद विषय उसी एक्ट के अधीन मुकदमा
करने वाले उन्हीं पक्षकारों के बीच या ऐसे पक्षकारों
के बीच के बिना में व्युत्पन्न अधिकार के अधीन
के या उनमें से कोई दबा करते हैं; किसी पूर्वकी
वाद में भी ऐसे न्यायालय में पक्षकार: और सारत:
विवाद रहा है जो ऐसे पश्चातवर्ती वाद का या
उस वाद का जिसमें ऐसा विवाद वाद में उठया
गया है, विचारण करने के लिए सक्षम या और
ऐसे न्यायालय द्वारा चुना जा चुका है; अतः यह
वाद सिविल प्रक्रिया संहिता की धारा 11 के अन्तर्गत

पक्षणीय नहीं है।



जब एक बार सामान्य न्यायालय
में वाद दायर कर डिसी व निर्णय जारी किया जा
युक्त है और इस भूमि वास्तु पुनः वाद लेकर आये
है इसमें Same party, Same property, Same cause
of action, Same interest, अतः उपरोक्त विधि
स्थिति के आधार पर वादी का वाद पक्षणीय नहीं
होने के कारण खारिज किया जाता है।
तदनुसार पचाई डिसी जारी है।

हुक्म

हुक्म या कोषवाह

नम्बर
अहकाम
हुक्म की
जारी

पत्रावली केसल शुमार होकर गम्बर से एड डम की
जाकर दारिखत हफ्त हो ।



निर्णय तुल्य न्यायालय में सुनाया गया।

[Signature]
जज/अधिकारी
मलतीसर

५
१
८